भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 22 | उदयपुर बुधवार 15 नवंबर 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

खेंखरे पर गाय-बैलों का पूजानुष्ठान

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

यह भारत देश की ही विशेषता है कि यहां पुरूष ही नहीं, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे भी अपना त्यौहार मनाकर आनंद उल्लासमग्न होते हैं। पेड़-पौधों की पूजा आराधना ही नहीं होती, उनके विवाह तक रचे जाते हैं। कई गीत और गाथाएं मिलती हैं इनके गुणगान में। पशु-पक्षी भी मनुष्य के साथ उसके प्रारंभिक काल से जुड़े हुए हैं, तब ही तो मनुष्य के साथ उनके रिश्तों-नातों को लेकर बड़े मीठे-मीठे गीत और प्यारी-प्यारी कहानियां सुनने को मिलती हैं।

ये पशु-पक्षी, पेड़-पौधे मनुष्य के अभिन्न अंग हैं। उसके जीवन के सच्चे मित्र और हर समय के साथी हैं। उसके परिवार के प्रिय परिजन और पीढ़ियों के सुख-दुख के संगेती हैं। जीवन धन हैं। रक्षक-संरक्षक हैं। बल-संबल हैं। ये ज्ञान और आरोग्य, साधन और शक्ति, सत्ता और समझ प्रदान करने वाले अक्षय भंडार हैं।

कृषि प्रधान देश भारत की सर्वोच्च शक्ति उसका पशुधन रहा है। यह पशुधन है गाय और बैल। गाय तो यहां की माता ही है। उसका जाया बैल तो पूरी खेती का मूल मेरु है। गाय दूध देती है और उसका पूत अपने सबल कंधों पर पूरी पृथ्वी का भार झेले रहता है। शिवजी ने इसीलिए बैल को अपना वाहन

बनाया। यों भी सब ओर शिव है। सबको शिव चाहिए। शिव कहां नहीं हैं ! जहां नहीं हैं वहां शव है। निष्प्राण जीवन है।

किस्सा सुनने में आता है कि धरती के सभी प्राणी और देवी-देवता इकट्ठे हुए। तय हुआ कि धरती माता हम सबकी रक्षक है अत: इसके भार को किन का आधार दिया जाय। कोई प्राणी तैयार नहीं हुआ तब गाय आगे आई और उसने अपने बेटे बैल को इस हेतु तैयार किया। बैल ने तब अपनी मातृ-शक्ति का आशिष ले धरती मां को अपने सींगों पर धार्य किया तब से बैल सर्वत्र पूजित हुआ और गाय सबकी माता के रूप में प्रतिष्ठित हुई। इसलिए भारत की मूल शक्ति बैल शक्ति है। बैल युक्त शिवजी की आराधना बड़ी मंगलकारी मानी गई है। लोकधर्म के जो कला-संस्कार हैं, उनमें सबके मूल में यही शिव प्रतिष्ठित है। कठपुतली के खेल में मंगलाचरणमूलक यही स्तुति कही गई है-

बैल चढ़े सिवजी मिलै, पूरण हो सब काम।
खेल काठपुतली करां, ले कै हर को नाम।।

शिव मंदिरों में नांदियों की पूजा और प्रतिष्ठा का भी यही संस्कृतिजन्य भाव है। यह भाव लोकजीवन में तो अनुष्ठानिक समारोह के रूप में व्याप्त है। पूरा राजस्थान गोधन की पूजा कर हरख मनाता है। दीवाली का दूसरा दिन ही गाय बैल आदि मवेशियों को हलराने-दुलराने, सजाने-संवारने का है। यह दिन खेंखरे के नाम से प्रसिद्ध है। मवेशियों को खेंखरा खेलाने की प्रथा कई रूपों में देखी जाती है। इस दिन ताल-तलैयों, सरवर-नदियों में खूब अच्छी तरह मल-मलकर मवेशियों को नहलाया जाता है। एक रंग से लेकर दुरंगे, तिरंगे, सतरंगे उनके सींग रंगे जाते हैं।

कई शौकीन लोग उनके खुरों को भी रंग-बिरंगा करते हैं। मेहंदी के बड़े ही कलात्मक ठप्पों और बूटों में उनका पूरा शरीर रचाया जाता है। गले में घूंघरों की माला पहनाई जाती है। कहीं फूलों के हार शोभित होते हैं। कहीं रंग-बिरंगे कपड़ों-फूंदों की बड़ी आकर्षक लटकनी आंखों पर लहर-फहर घूंघटी अंदाज में नजारा मारती लक्षित होती है। यह लटकन 'कड़वा' कहलाती है। कई सम्पन्न मोट्यार नोटों की मालाओं से अपने मेवासी-मवेशी का मान कर फूले नहीं समाते हैं। कई लोग मोरपंख का बढ़िया गूंथा हुआ छोगा लगाते हैं। मोहरा बेड़ा बांधते हैं।

-शेष पृष्ठ सात पर

ल्होड़ी दीवाली के माण्डनें

-डॉ. कहानी भानावत-

ल्होड़ी दीवाली, दीवाली के ठीक पन्द्रह दिन बाद मनाई जाती है। इस दिन आंगन के माण्डनों की अपेक्षा देहरी- द्वार के माण्डनों की बहुलता देखी जाती है। रात्रि को सभी घरों की देहरियां नाना माण्डनों से जगमगाती देखी जा सकती हैं। इन माण्डनों में कई रूप देखने को मिलते हैं। प्राय: सभी माण्डनों में भीतर अथवा बाहर लक्ष्मीजी के पगल्ये दर्शाये जाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि उस दिन रात्रि को सभी गृहों में लक्ष्मीजी का आना होता है जिससे सभी घरों में पारिवारिक सुख, धन धान्य तथा ऐश्वर्य की वृद्धि दिखाई देती है।

ये भूमिअलंकरण माण्डनों के रूप में विकसित हुए हैं। वैसे माण्डनें जब भी घरों को लींपा या पोता जाता है, माण्डे जाते हैं परन्तु होली, दीवाली आदि त्यौहारों पर विशेष प्रकार के माण्डनें माण्डने का प्रचलन अत्यन्त प्राचीन काल से चला आ रहा है। इन माण्डनों में दीवाली पर सौलह दीपक, चौक, पगल्ये, जलेबी तथा मुरकी, गाय के खुर, होली पर चंग, कमल का फूल, घेरा तथा खेंडा, शादी पर सौलह वाटके, पगल्ये तथा कलस कुण्डे जैसे माण्डनें ओवरों-मांगलिक गृहों के बाहर माण्डे जाते हैं।

ये सभी माण्डनें आंगन के चारोंओर बेल माण्डकर माण्डे जाते हैं। कोई तीज-त्यौहार आने पर, जब प्रथमबार विवाह के उपरान्त वधू घर लाई जाती है, लड़का ससुराल से घर लौटता है तब विविध प्रकार के माण्डनें माण्डे जाते हैं। वैसे आमतौर पर फूल, सात्ये, चौक जैसे माण्डनें ही माण्डे जाते हैं। इन सभी माण्डनों के पास छोटे-छोटे घेवर, सात्ये, कुलड़ी, दीये, झाड़, वाटके, जलेबी तथा छोटी-छोटी चिड़कलियां भी माण्डी जाती हैं।

इनसे आंगन की सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं। ये माण्डनें शुभ शकुन के भी प्रतीक होते हैं जिनमें पारिवारिक सुख-समृद्धि की भावना निहित रहती है।

इन माण्डनों को कोरने में महिलाएं बड़ी प्रवीण होती हैं। राती अथवा पीली मिट्टी से लींपे आंगन पर पानी में घुली खड़ी-खड़िया से रूई, बालों के गुच्छे अथवा साधारण कपड़े की सहायता से ये माण्डनें माण्डे जाते हैं। हींगलू, हड़मची-गेरू अथवा लाल रंग से खाके के रूप में इन माण्डनों को कोरने के बाद खड़ी अथवा पाण्डू से उन्हें पूर्ण किये जाते हैं। रेखाओं को पूरने के लिए केवल उंगलियां ही प्रर्याप्त होती है।

गृहवधुओं को इन्हें माण्डने के लिए किसी प्रकार की शिक्षा नहीं लेनी पड़ती। निरन्तर अभ्यास, लगन एवं उत्साह से वे स्वयं ही प्रवीण हो जाती हैं। वैसे विवाह-शादी के अवसरों पर किसी कुशल औरत से ही कलस, कुण्डे आदि मण्डवाये जाते हैं जिसे पारिश्रमिक के रूप में एक नारियल देने की परम्परा प्रचलित रही।

मांगलिक, धार्मिक एवं स्वस्थ सुन्दर भावनाओं के प्रतीक तथा गृह-वातावरण पवित्र एवं स्वच्छ रहने की भावना स्वरूप राजस्थानी रंगीनियों की यह उत्कृष्ट कला उनके 'दूधां न्हावो, पूतां फलो' परिवार की सूचक है। जिस प्रकार कमल से जल की, फूल से थल की तथा बरातियों से विवाह की शोभा आंकी जाती है, उसी प्रकार घर-आंगनों की शोभा माण्डनों से आंकी जाती है। कहीं-कहीं हीड़, तकड़ी-तराजू, सांठे-गन्ने, पावड़ी तथा गाय के खुर के आकार के माण्डनें भी माण्डे जाते हैं।

परदेश से लौट रहे प्रियतम की प्रतीक्षा में गृहिणियां अपने घरों को किस ढंग से सजाती हैं, इसका एक राजस्थानी कवि ने जो चित्र उतारा है, उसके पता चलता है कि माण्डनों का कितना महत्त्व आंका गया है-

''लींप्योचूंप्यो आंगणियो म्हारो
सैंस माण्डणा माण्डूं हो।
तातो-तातो खीच बणाऊं
मोठ बाजरी खाण्डूं ओ।
घर-घट्टी और ऊंखल सारा
नाचण लाग्या हो।
बछड़ा कूदे, फूदे चिड़कल्यां
डांडा केलू हो।।''

माण्डनों की यह परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। आंगन के लिए जिसकी कीमत हीरे, पन्ने, माणिक और मोतियों से भी नहीं आंकी जा सकती है।

बाजार / समाचार

अक्षय लोकजन का उदयपुर विशेषांक लोकार्पित

उदयपुर (ह. सं.)। अक्षय लोकजन पत्रिका के उदयपुर विशेषांक का लोकार्पण मेवाड़ राजपरिवार के डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ द्वारा किया गया। अंक में उदयपुर के वैभव, इतिहास, जल प्रबंधन, शिक्षा एवं रेलवे के विकास तथा शहर की प्रमुख विभूतियों पर लेख शामिल हैं। पत्रिका का संपादन डॉ. मनीष श्रीमाली ने एवं प्रकाशन जय किशन चौबे ने किया है। लोकार्पण में ले.ज. एन.के सिहं राठौड़, प्रो. विमल शर्मा भी उपस्थित थे।

विशेषांक को प्रो. भगवतीप्रसाद शर्मा, डॉ. जे के ओझा, डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू', डॉ. महेन्द्र भानावत, ज्ञान प्रकाश सोनी, डॉ. गोविन्दलाल मेनारिया, डॉ. स्वाति जैन, डॉ. सुरेंद्र पालीवाल, प्रो. विमल शर्मा, हरीश शर्मा, मदनमोहन टाँक, पन्नालाल मेघवाल, डॉ. राजेंद्रनाथ पुरोहित, डॉ. हेमेंद्र चौधरी, डॉ. विनय भाणावत, डॉ. मनीष श्रीमाली, अशोक आर्य, सतीषकुमार श्रीमाली जैसे अधिकारी विद्वानों के आलेखों ने बड़ी शोधपूर्ण मूल्यांकनपरक सामग्री से अत्यन्त उपयोगी एवं संग्रहणीय बना दिया है।

पिम्स हॉस्पिटल में विश्व रेडियोलॉजी दिवस मनाया

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा के रेडियोलॉजी विभाग में विश्व रेडियोलॉजी दिवस मनाया गया। चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने सभी को शुभकामनाएं दी। आर्मी हॉस्पिटल के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल डॉ. यादवेंद्रसिंह यादव विशिष्ठ अतिथि थे। साईं तिरुपति यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. जे. के. छापरवाल, पिम्स के डीन डॉ. सुरेश गोयल, मेडिकल सुपरिंटेंडेंट डॉ. चंद्रा माथुर, सभी डिपार्टमेंट के हेड, रेजिडेंट डाक्टर्स वह टेक्निकल स्टाफ ने भाग लिया।

रेडियोलॉजी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. हरिराम ने एक्सरे, सोनोग्राफी, सीटी स्कैन, एमआरआई, फ्लोरोस्कॉपी, डीएसए, मैमोग्राफी व इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी से संबंधित सुविधाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर ऑर्थोपेडिक्स हेड डॉ. बी. एल. कुमार, रेडियोलॉजी विभाग से डॉ. राजाराम शर्मा, डॉ. सौरभ गोयल, गाइनेकोलॉजी के एचओडी डॉ. भटनागर, जनरल सर्जरी के हेड डॉ. पी. पी. शर्मा, एनेस्थीसिया विभाग के डॉ. कमलेश व डॉ. कुशवाहा समेत कई लोग मौजूद रहे। रेडियोलॉजी डिपार्टमेंट के इंचार्ज जयप्रकाश त्यागी ने आयोजक थे।

हिंदुस्तान जिंक और ग्रीनलाइन में भागीदारी

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की प्रमुख एलएनजी-चालित हेवी ट्रकिंग लॉजिस्टिक्स कंपनी, ग्रीनलाइन मोबिलिटी सॉल्यूशंस लि. ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करते हुए हिंदुस्तान जिंक के लिए अपने एलएनजी-चालित ट्रक तैनात किए हैं। ग्रीनलाइन, वहनीय माल परिवहन में अग्रणी बनने के लिए लक्ष्य के अनुरूप, हिंदुस्तान जिंक के रोड लॉजिस्टिक्स के परिचालन के लिए एलएनजी-संचालित ट्रकों को तैनात करने के संबंध में 200 करोड़ रुपये का निवेश कर रही है।

जिंक के मुख्य कार्यकारी एवं वेदांता के कार्यकारी निदेशक अरुण मिश्रा ने कहा कि हमने सभी के लिए वहनीय भविष्य के निर्माण के संबंध में अपने परिचालन के हर पहलू में वहनीय तरीकों को शामिल किया है। वहनीयता, हमारी कंपनी की पहचान का एक अभिन्न अंग है और यह हमारे प्रबंधन तथा कर्मचारियों की मूल प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करती है। ग्रीनलाइन के मुख्य कार्यकारी आनंद मिमानी ने कहा कि हमें हिंदुस्तान जिंक के लिए स्थायी लॉजिस्टिक्स पार्टनर के रूप में चुने जाने की खुशी है। हमें उसके भारी माल परिवहन को डीकार्बनाइज करने की प्रक्रिया में मदद करने में हमारी भूमिका का उत्सुकता से इंतज़ार है।

विजेंद्रसिंह राठौड़ 'जी टाउन एक्सीलेंस अवार्ड' से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के नर्सिंग सुपरिटेंडेंट विजेंद्रसिंह राठौड़ को राष्ट्रीय स्तर पर अपने रोगियों को उत्कर्ष देखभाल और असाधारण कौशल एवं पूर्ण समर्पण के लिए 'जी टाउन एक्सीलेंस अवार्ड' से सम्मानित किया गया है।

गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के सीओओ ऋषि कपूर ने विजेंद्रसिंह को बधाई देते हुए कहा कि उत्कृष्टता के प्रति आपकी प्रतिबद्धता नर्सिंग पेशे के लिए एक उच्च मानक स्थापित करती है और स्वास्थ्य सेवा उद्योग में नर्सों के महत्वपूर्ण प्रभाव को दर्शाती है। नर्सिंग उत्कृष्टता के प्रति कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता वास्तव में इस प्रतिष्ठित पुरस्कार की हकदार है। विजेंद्रसिंह अपने असाधारण नर्सिंग अभ्यास के माध्यम से गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में आने वाले रोगियों को इसका लाभ भविष्य में भी देते रहेंगे।

GMCH
GEETANJALI HOSPITAL
HEALTH IS HAPPINESS
शुभ दिपावली
ये दिपावली सेहत वाली!!
श्वास सम्बंधित किसी भी समस्या के इलाज हेतु हमारी
एडवांस्ड रेस्पिरेटरी मेडिसिन एवं पल्मोनोलोजी विभाग विशेषज्ञों की टीम
डॉ. एस.के. लुहाड़िया
कंसलटेंट
(टी.बी. एवं रेस्पिरेटरी मेडिसिन)
डॉ. गौरव छाबड़ा
कंसलटेंट
(टी.बी. एवं रेस्पिरेटरी मेडिसिन)
डॉ. ऋषि कुमार शर्मा
कंसलटेंट
(टी.बी. एवं रेस्पिरेटरी मेडिसिन)
डॉ. अमित गुप्ता
कंसलटेंट
(पल्मोनरी मेडिसिन)
डॉ. शुभकरण शर्मा
कंसलटेंट
(टी.बी. एवं रेस्पिरेटरी मेडिसिन एवं आईसीयू इंटेंसिविस्ट)
डॉ. अतुल लुहाड़िया
कंसलटेंट
(टी.बी. एवं रेस्पिरेटरी मेडिसिन)
इस दिपावली अपने फेफड़ो की जाचं करवाये
+ चिकित्सक परामर्श + पीएफटी + चेस्ट एक्स-रे
₹ 1,000/-
₹ 499/-
ऑफर 30 नवंबर 2023 तक लागू
रेस्पिरेटरी मेडिसिन एवं पल्मोनोलोजी संबंधित उपलब्ध सुविधाएँ
विशेषज्ञों से परामर्श (ओ.पी.डी.)
6 मिनट वॉक टेस्ट
इंटरकॉस्टल ड्रेनेज ट्यूब प्रोसिजर
भर्ती सुविधा
पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन
टी.बी. के निदान हेतु बलगम की जाँच
रेस्पिरेट्री आई.सी.यू.
प्ल्यूरल फ्लूइड एस्पिरेशन
बलगम का सीबीनाट टेस्ट
एलर्जी टेस्ट
स्लीप स्टडी लेब
टी.बी. आइसोलेशन वार्ड्स
पी.एफ.टी. (स्पाइरोमेट्री), डी.एल.सी.ओ.
फ्लू एवं निमोनिया से बचाव के टीके
सी.टी.स्केन व सोनोग्राफी गाईडेड बायोप्सि
ब्रोन्कोस्कोपी
थोरेकोस्कोपी
मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना
राजस्थान गवर्नमेंट हैल्थ स्कीम (RGHS)
• भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (ECHS) • कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ESIC) • उत्तर पश्चिमी रेलवे (NWR) • हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड (HZL) • स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (SBI) • भारत संचार निगम लिमिटेड (BSNL)
• भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI) • भारतीय खाद्य निगम (FCI) • राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड (RSMM) • सभी महत्वपूर्ण टी.पी.ए. (TPA) व इन्श्योरेन्स से अधिकृत।
गीतांजली मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल, उदयपुर
नेशनल हाईवे-8 बायपास, एकलिंगपुरा चौराहा के पास
+91 294 250 0044

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 नवंबर 2023

सम्पादकीय

सकारात्मक ऊर्जा का संग्रहण

दीपावली प्रकाश का त्यौहार है। प्रकाश सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है जबकि अंधकार नकारात्मक ऊर्जा का ओज है। वर्ष में बारह महीनों में कार्तिक माह की अमावस सबसे घना अंधेरा लिये होती है इसीलिए चारों ओर नकारात्मक शक्तियों का बोलबाला दिखाई देता है। इतनी सारी नकारात्मक शक्तियों से मुकाबला करने के लिए ही असंख्य दीपकों का प्रकाश किया जाता है जिससे न केवल दीवाली पर अपितु पूरे वर्ष भर की नकारात्मक स्थितियों को चीरते हुए प्रकाशजनित ऊर्जा का संग्रहण हो सके।

साहित्य मनीषियों ने प्रकाश पर सर्वाधिक लिखा है। अन्तर्मन के अंधियारे से लेकर बाहर के घर-आंगन, चौपाल-चौराहा देहरी तक को दीपक से जगमगाहट करने की अनेक उदात्त कल्पनाएं बड़ी रोचकता से वर्णित हुई हैं। अन्तर्मन में ज्योति भरने पर बाहर का तमस धीरे-धीरे स्वत: ही दूर होता चला जाकर चारों ओर प्रकाश विकीर्ण हुआ लगता है।

दिव्य प्रकाश की जब बात चलती है तो वे सारे महामानव जिन्होंने अपने जीवन में अपने को जन कल्यानार्थ समर्पित कर दिया वे आगे जाकर लोक में देव पुरुष के रूप में चर्चित हुए। यही नहीं, अपनी साधना करने वाले महा मनीषी भी हमारे लिए विशिष्ट सन्त तथा तीर्थंकर बने।

दीवाली की रात साधना और सिद्धि प्राप्ति की रात भी है। अनेक साधक गुप्त स्थानों पर जाकर साधनारत रहते पूरे वर्ष के लिए उपलब्धिमूलक सिद्धियां प्राप्त करते हैं। इनमें वे लोग भी होते हैं जो तंत्र-मंत्र की साधना कर पूरे वर्ष भर ही अनेक प्रकार की अला-बलाओं से ग्रसितजनों का इलाज करते हैं।

बैकुण्ठ चतुर्दशी को चित्तौड़ के किले पर दिव्य आत्माओं का अदृश्य मेला लगता है। इस मेले में दिव्य आत्माओं के परिवारजन एकत्र होकर मंत्रणा करते हैं। इस मेले में प्रकाश बिम्ब के रूप में अनेक प्रकार की रोशनियां हल्की, मध्यम तथा तेज प्रकाश के रूप में सम्मिलित होती दिखाई देती हैं जो विभिन्न देवताओं के आगमन की सूचक होती हैं।

प्रख्यात कवयित्री महादेवी वर्मा ने लिखा- 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल, प्रियतम का पथ आलोकित कर।' माटी का दीपक मधुर-मधुर प्रकाश देता है। कोई शहर गांव का घर इस दिन ऐसा नहीं होता जहां दीया नहीं जलता हो।

यह दीया लक्ष्मी का प्रतीक भी है। जहां अंधेरा होगा वहां लक्ष्मी क्यों जायेगी? इसलिए लक्ष्मी का बुलावा प्रत्येक घर-आंगन-देहरी में प्रकाश देने, समृद्धि देने के लिए होता है। लोकजीवन में ऐसी अनेक लोक प्रचलित कथा-कहानियां मिलती हैं कि लक्ष्मी आती है और धनधान्य की वृष्टि कर जाती है।

यह लक्ष्मी नानारूपों में आती है। माण्डनों के रूप में उसका मुकलाना सबको सुहाता है। हर बड़े माण्डने के साथ पगल्याजी का मण्डन लक्ष्मीजी के पथ-चिन्ह के रूप में परिदर्शित होता है।

लक्ष्मीजी के हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म शोभित हुए होते हैं इसलिए दीवालों पर जो चित्र मण्डित होते हैं वे बड़े चमक-दमक के साथ आकर्षक होते हैं। लक्ष्मी धन की तो सरस्वती विद्या की, ज्ञान की देवी है। दोनों का होना जरूरी है। ज्ञान और धन के बिना मनुष्य का काम भी अवरूद्ध हो जाता है।

दीवाली सबकी शुभ हो। लाभवंत हो। समृद्धिदायक और सुख देने वाली हो। स्वस्थ और स्वास्थ्यदायक हो। उसके मंगल प्रकाश की ऊर्जा पूरे वर्ष भर ही हमें सकारात्मक ऊर्जा से स्निग्ध करती रहे।

दीपावली पर सभी लेखकों, साहित्यकारों, पाठकों, विज्ञापनदाताओं तथा शुभेच्छुओं को हार्दिक बधाई।

गोरधनजी और अन्नकूट

-डॉ. तुक्तक भानावत-

दीवाली के दूसरे दिन खेंकरे पर प्रात: रात रहते-रहते औरतें अपने घर का कचरा थाली में ले बाहर डालने जाती हैं और आते वक्त 'दरीदर-दरीदर सगलो जाजो, म्हाणै घर में लिछमी आजो' कहते हुए चाबी से थाली बजाती हुई लौटती हैं साथ ही एक दीपक चौराहे पर और एक-एक दीपक पड़ोसियों के घर 'परस्या पाहुना' को सूचना देती हुई छोड़ आती हैं। 'परस्या पाहुना' भगवान पुरुषोत्तम के शुभागमन का संकेत है।

पल्ले की ओट में थाली द्वारा घर-घर छोड़ा यह दीपक प्रत्येक घर के ज्योतिर्मय जीवन की मंगल कामना का सूचक है। प्रेम, सुख, मंगल और पारिवारिकता का कितना ऊंचा भाव छिपा है इन दीपों में! इस दीवाली त्यौहार में! व्यक्ति इस दिन स्वयं अपना ही घर-परिवार प्रकाशित हुआ नहीं देखना चाहता अपितु चाहता है कि प्रत्येक घर-परिवार और यह अग-जग इस ज्योति से ज्योतित हो। व्यष्टि में समष्टि की कितनी उदात्त भावना छिपि है, वसुधैव कुटुम्बकम् के विस्तार को नापने वाले इस त्यौहार में!!

इसी दिन प्रात: गोबर के गोरधनजी बनाकर घर की देहरी पर पूजे जाते हैं। ये गोरधनजी जहां भूत-प्रेत के प्रतीक माने जाते हैं वहां खेतीहर भूमि के भी विश्वास हैं। गायों के भड़क जाने से खेत के फलै में सोये गोरधनजी गचर दिये गये तो उनकी स्मृति उनकी पूजा के रूप में स्थाईत्व ग्रहण कर गई। इन गोरधनजी की पूजा की जाती है और ल्होड़ी दीवाली तक ये देहरी के वहीं पड़े रहते हैं। संध्या-रात्रि को किसान धन-लिछमी के प्रतीक चौपायों को मेंहदी से सिणगारते हैं। उनके सींगों को भांति-भांति के रंग से रंगते हैं। उनके गलों में घूघरे तथा मोरपंख के बेड़े-छेड़े बांधते हैं। खासतौर से बैलों को एकत्रित कर लपसी, चावल, नारेल की धूप दी जाती है और हीड़ दीपों से उनकी आरती उतारी जाती है।

किसान इस मौके पर उनके धोक लगते हैं और उनकी यशगाथा हीड़ गाने को मचल पड़ते हैं। चौपे में इस दिन गायें खेंकरे खेलाई जाती हैं। भीलों में किसी सत्चरित्र भील की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण पत्थर पर उसकी प्रतिमा उत्कीर्ण कर 'गाता' के रूप में पूजन भी इसी दिन किया जाता है। नाथद्वारे के श्रीनाथजी मन्दिर का प्रख्यात अन्नकूट उत्सव भी एक महत्वपूर्ण प्रसंग है जो भीलों के ही लूटने का पारम्परिक पट्टा कहा जा सकता है।

कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' के प्रथम बाल लघुकथा संग्रह का विमोचन

इंदौर (ह. सं.)। साहित्यिक संस्था क्षितिज के अखिल भारतीय लघुकथा साहित्य सम्मेलन में उज्जैन की वरिष्ठ साहित्यकार कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' के प्रथम बाल लघुकथा संग्रह 'हिप-हिप-हुर्रे' का विमोचन हुआ। संस्था द्वारा वाधवानी को 'हिप-हिप-हुर्रे' के लिए कृति सम्मान तथा 'क्षितिज लघुकथा रत्न सम्मान-2023' से सम्मानित किया गया।

सम्मेलन की अध्यक्षता मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. विकास दवे ने की। मुख्य अतिथि सीए जयंत गुप्ता, वरिष्ठ अतिथि लघुकथा के पुरोधा बलराम अग्रवाल, सम्मानित अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यकांत नागर थे। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष सतीश राठी, सहयोगी, सदस्य एवं अन्य राज्यों से आए वरिष्ठ साहित्यकार उपस्थित थे।

जीवन का प्रकाश

– डॉ. रमेश 'मयंक' –

आओ हम मिलकर ढूंढ़ सकें
जीवन का प्रकाश
अपने स्वभाव को
क्रूर-अत्याचारी होने से बचाकर
हमारे कारण कोई निर्दोष
यातना का शिकार न हो जाय
सतर्कता को अपनाकर
हम धन के मद में
मदान्ध नहीं कहलाएं
पर न सोचें धन के बल पर
सब कुछ खरीद लेंगे।
हम नहीं जागे तो
कुछ अनुभवी समझदार लोग
समय के साथ देखेंगे
परखेंगे -सोच समझकर
निर्णायक स्वरों में
लक्ष्मी वाहन की तरह हमें भी
उलूक मानकर आईना दिखाते हुए
बाहर का रास्ता दिखायेंगे।
उचित यही है
घरों को जड़ पदार्थों से भरने से
बचाकर दिखावा करने के
बनावटी पन से बच जाए
अन्यथा जीवन में
चेतना के द्वार बंद हो जायेंगे
बाहर की तरफ भागने की
भूलों को सुधार कर
भीतर नहीं देखा तो
जीवन के प्रकाश से
वंचित रह जायेंगे।

धूप का गीत

धूप है कि दूध पर मलाई है
धूप है कि जयपुरी रजाई है।
मखमल सी गरम-गरम
मलमल सी नरम-नरम
छूते ही पिघल जाए
तन मन को छू जाए
धूप है कि बर्फ की कलाई है
चूड़ियां हवा की खनकाई है।
तितली सी चंचल यह
फूलों सी कोमल यह
नाजुक है कलियों सी
तन्वंगी गलियो सी
धूप है कि सूर्य की सगाई है
आंगन में बजती शहनाई है
कभी यहां, कभी वहां भागती
अधमुंही आंखों से जागती
चुप्पी से यह गरमा जाती
पूछो कुछ, यह शरमा जाती
धूप है कि छांह की छपाई है
शरद के जनम की बधाई है।

-डॉ. भगवतीलाल व्यास

Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth (Deemed To Be University)

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय)

सरस्वती देवयन्ते हवन्ते

Pratap Nagar, Udaipur – 313001 (Raj.) Ph. & Fax : 0294-2492440, Email: admissions@jrnrvu.edu.in

समस्त पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) से मान्यता प्राप्त

ADMISSIONS OPEN - 2023-24

Manikyalal Verma Shramjeevi College

Faculty of Social Sciences and Humanities : Mobile No. : 9829160606, 9460826362, 9413752492

B.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics, Political Science, Public Administration, Environmental Science, Jyotish
M.A. : English, Hindi, Sanskrit, History, Sociology, Geography, Economics, Political Science
Diploma Course : Diploma in Panchgavya, Diploma in Acupressure, P.G. Diploma in GIS & Remote Sensing, Bachelor of Journalism and Mass Communication **Certificate Course :** Spoken English, Proficiency in English and Communication Skills, Culture of Rajasthan, Research Methods and Data Analyst, Human Rights, Acupressure, Sanitation and Modern Society, Health Awareness

Faculty of Commerce : Mobile No. : 9460492196, 9460372183, 9461180053

B.Com., B.B.A., M.Com. (Accounting, Business Administration), Master of NGO Management, P.G. Diploma in Training & Development Certificate Course: Plastic Processing and Manufacturing Skills, Tally ERP-9.0, Goods and Service Tax (GST)

Faculty of Science : Ph. 7852803736, 9828072488

B.Sc. : Physics, Mathematics, Chemistry, Statistics, Computer Science, Botany, Zoology, Biotechnology, Environmental Science, Geology
M.Sc. Chemistry (Inorganic, Organic, Physical, Industrial)
M.Sc. : Mathematics, Physics, Botany, Zoology, Environmental Science, Statistics, Bioinformatics, Biotechnology, Computer science

Jyotish and Vastu Sansthan - 9460030605

M.A. (ज्योतिर्विज्ञान), **Diploma and Certificate Courses in Astrology** (ज्योतिष), Vastu (वास्तु), Palmistry (हस्तरेखा), Worship System (पूजा पद्धति), Rituals (अनुष्ठान), Vedic Culture (वैदिक संस्कार संस्कृति).

Manikyalal Verma Shramjeevi Evening College
Mob. - 9414291078, 8209630249

B.A, BA (Additional), B.Lib MA (All Subjects), MA (Music)MA Education, M.Com, M.Sc (Chemistry/Botany /Zoology/Physics/Maths), MA/M.Sc (Psychology), M.Lib PG Diploma in Guidance counseling, PG Diploma in Mental Health Counselling, B.Ed in Special Education (ID), B.Ed Special Education (HI) D.Ed. Special Education (IDD) D.Ed. Special Education (HI), D.Ed. Special Education (VI), (BA/B.Com/B.Sc Integrated BEd special Education Eligibility 10+2), DCBR (Diploma in Community Based Rehabilitation), DISLI (Diploma in Indian sign language interpretation (subject to RCI approval), D.Lib, Diploma in Music

Department of Physical And Yoga Education
M.V. Shramjeevi Collage Campus, Ph.: 9352500445

PhD. Yoga, M.A.Yoga, P.G. Diploma In Yoga, PhD. Physical Education, M.A. Physical Education, Bachelor of Physical Education & Sports, (B.P.E.S), Diploma In Gym Instructor, Diploma in Sports Coaching (NIS) - 1 Year(Wrestling, Judo, Powerlifting, Yoga, Weight Lifting, Boxing, Wusu)

Department of Physical Education, Pratap Nagar Campus - 9829943205

Diploma in Sports Coaching (NIS) - 1
Year (Hockey, Football, Kabaddi, Volleyball, Basketball, Badminton)

Department of Law - 9414343363, 9887214600

B.A.LL.B. (5 Year Integrated Course), LL.B. (3 Year Degree Course), LL.M. (2 Years), Ph.D., PG Diploma (1 Year Course) in Labour Law (PGDLL). Cyber Law (PGDCL), Law & Forensic Science (PGDLFS). Accountancy & Taxation (PGDLTA) and Intellectual Property Laws (PGDIPL). LLM 2 years (Criminal and Business Law)
Diploma in Criminal Psychology

Department of Pharmacy - 9414869044

D. Pharma (Diploma in Pharmacy)

Faculty of Engineering - Rajasthan Vidyapeeth Technology College
Ph. : 0294-2490210, 9829009878, 9950304204

Diploma in Engineering - Civil Engineering, Electrical Engineering, Mechanical Engineering. Electronics & Communication Engineering, Computer Science.

Faculty of Computer Science and Information Technology
Ph. 2494227, 2494217, 9414737125

B.C.A., M.C.A., M.Sc.(CS), B.Sc. in Data Science, P.G.D.C.A., B.Voc in Software Development, DCA (Diploma in Computer Applications).

Department of Physiotherapy - Ph. : 0294-2656271, 9414234293

Bachelor of Physiotherapy (B.P.T.). Master of Physiotherapy (M.P.T.). Master of Hospital Management. Fellowship in Palliative Care and Oncology Rehabilitation, Fellowship in Neurological Rehabilitation, MBA in Health Care Management. Fellowship in Geriatric Care and Rehabilitation, Fellowship in Sports Rehabilitation

Department of Nursing - Ph. 9414308252, 9782920126, 9772982280

B.Sc. Nursing
G.N.M. Nursing

Udaipur School of Social Work - Ph. 8118806319, 9829445889

Master of Social Work (MSW). PG Diploma in HRM, PG Diploma in CSR
Master of Social Work (MSW - Self Finance Evening Batch)

Sahitya Sansthan (Institute of Rajasthan Studies)
Ph. : 8003636352

M A in Ancient Indian History, Culture and Archaeology; PG Diploma in Archaeology.

School of Agricultural Sciences, Dabok - 9460728763

B.Sc. (Hons.) Agriculture, B.Sc. Horticulture, B.Tech. Food Technology,
M.Sc. in Agronomy, Horticulture, Plant Pathology and Genetics & Plant Breeding

Manikyalal Verma Shramjeevi Girls College, Dabok
Ph. : 0294-2655327, 9694881447, 9079919960, 8209568068,7014982037

B.A., B.Com., B.Sc., M.A. (English, Hindi, Sanskrit, Pol. Sc., History. Geography, Sociology, Economics), M.Com (Accountancy), M.Com in Business Adm., Special Classes for English Speaking and Computer Basics. Special classes for competition exams (free of charges)

R.V. Homeopathic Medical College and Hospital, Dabok
Ph. : 0294-2655974, 2655975, 9414156701, 9351343740

Diploma in Homoeopathic Pharmacy (DHP).

Faculty of Management Studies (FMS)
Ph. : 0294-2490632, 9460322351, 9414161889, 9636803729, 9782049628, 9001556306, 9928544749

B.B.A, M.B.A (H.R / Marketing / Finance / Production & Operation Management / I.B / I.T / Tourism and Travel / Retail Management / Agri-Business / Family Business Management), M.H.R.M.

Department of Travel, Tourism & Hotel Management
Faculty of Management Studies - 9950489333

BBA, BBA (Tourism & Travel) Specialisation in Hotel Management
Diploma in Hotel Management (Food & Beverage Service)
Diploma in Hotel Management (Food Production)
Diploma in Hotel Management (Housekeeping)

Manikyalal Verma Shramjeevi Girls College, Pratapnagar, Udaipur, Mob. : 9928456341, 9929939963

B.A., B.Com, B.Sc. , M.A. Geography, Pol.Sc., Regular Special Classes for Competition exams

Lokmanya Tilak Teachers Training College, Dabok
Faculty of Education - Ph. : 8306182436, 0294-2655327

M.Ed., M.A. Education, B.Ed.-M.Ed. (3 Year Integrated), B.Ed. (Child Development), D.El.Ed., PG Diploma in Yoga

SHIVA © 9828244344

Note :

For more information about the admission in various courses like minimum percentage, fee structure etc. please go through our website : www.jrnrvu.edu.in, respective prospectus or contact concerned department

REGISTRAR

Quality Programmes with Best Placement

PACIFIC UNIVERSITY

दिपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

PROFESSIONAL COURSES OFFERED BY UNIVERSITY

MBA | B.Tech | B.Pharma | B.Sc. (Hon.) Agriculture | BA + LL.B | BCA | B.Sc. (Hotel Mgmt.) | Diploma Polytechnic

"INTRODUCING A NEW COURSE AT THE UNIVERSITY"

Doctorate of Pharmacy (Pharm.D)

Program Highlights

- Receive End-to-End Placement Assistance including Mock Interviews, Resume Building, Aptitude Training etc.
- Gain Hands-on Experience with real-life Industry Projects
- Get Personalized Mentorship from top Industry Experts
- Exclusive access to upGrad's Job Portal with 350+ Hiring Partners
- Learn from industry experts and gain valuable insights on the current Industry trends

Placements

55 CAMPUS DRIVE'S | 100 COMPANIES PROPOSAL | 15 LPA HIGHEST | 6.75 LPA AVERAGE

Scholarships up to 100%*

शत प्रतिशत शुल्क मुक्ति तक की आकर्षक छात्रवृत्तियां

उदयपुर संभाग के प्रत्येक विद्यालय के 12 वीं कक्षा के हर संकाय के पांच शीर्ष छात्र

सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता छात्र	100% शुल्क मुक्ति
द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्तकर्ता छात्र	75% शुल्क मुक्ति
चतुर्थ व पांचवा स्थान प्राप्तकर्ता छात्र	50% शुल्क मुक्ति

उपरोक्त छात्रवृत्तियां कक्षा 12वीं में 2022 में उसके विद्यालय में कक्षा विशेष में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता छात्र द्वारा विश्व विद्यालय के B.Tech, B.Sc., B.Com, BBA, BCA, BSc- Hotel Management, Diploma-Polytechnic, Fire & Safety, B.A.+ LL.B. And B.Sc. Agriculture में प्रवेश पर दी जायेगी। कक्षा के अलग-अलग सेक्शन मान्य नहीं होंगे।

फुल ब्राइट छात्रवृत्तियां: 20 प्रतिशत तक शुल्क मुक्ति*

उदयपुर जिले के फुल ब्राइट - 10 वीं कक्षा से सभी परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण छात्रों के द्वारा निम्न पाठ्यक्रमों के शुल्क में निम्नानुसार 20 प्रतिशत छात्रवृत्ति प्रदान की जायेगी

Diploma Polytechnic	दसवी कक्षा में 60 या अधिक अंक
B.Tech., B.Sc., Hotel Mgt. BBA, B.Com., BCA, BA, B.Sc., BJMC, B.Sc., Agriculture and B.A.LL.B	दसवी व बाहरवी में 60 या अधिक अंक
MBA, MCA, M.Tech, MA, MTHM, LL.B, LLM MJMC, M.Sc. Agriculture	दसवी, बाहरवी व स्नातक में 60 या अधिक अंक

उपरोक्त सभी छात्रवृत्तियां केवल उन्हीं छात्रों को देय होगी जब छात्र उसकी पात्रता परीक्षा के परिणाम आने के 30 दिन में छात्रवृत्ति योजना में ऑनलाइन अथवा प्रत्यक्ष में विश्वविद्यालय में पंजीयन करा लेंगे।

Sports Scholarships

International Players	100% Fresship
National Level Players	50% Freeship
State Level Players	20% Freeship

In all UG and PG Course except B.P.Ed., M.P.Ed., B.Ed. and D.L.Ed., D.Pharm, B.Pharm, M.Pharm

BUS FACILITY AVAILABLE

Courses Offered as Per National Education Policy - 2020

SEPARATE HOSTEL FACILITY FOR BOYS & GIRLS

MANAGEMENT (AICTE Approved)
MBA (Dual Specialization) | MBA (Executive)
MBA (Hospital Administration)
MBA Business Analytics | MBA (Digital Marketing)
Mob. 96729 78034

ENGINEERING (AICTE Approved)
B.Tech : Computer Science & Engineering with Artificial Intelligence & Machine Learning / Data Science & Analytics/ Mining/Mechanical/Electrical/Civil Engineering
B.Tech. (Lateral Entry) | M.Tech. (All Streams)
Mob. 76650 17791

COMPUTER SCIENCE
BCA | MCA | MCA Lateral Entry | PGDCA | M.Sc. IT
Mob. 95878 92884

POLYTECHNIC DIPLOMA (AICTE Approved)
Diploma : Civil/Mechanical/Electrical/Mining/CSE
Diploma (Lateral Entry)
Mob. 95303 60191

BASIC SCIENCE
B.Sc. (Both Maths and Bio Group)
M.Sc. (Physics, Chemistry, Mathematics, Botany, Zoology)
Mob. 76650 17783

SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES
B.A. | B.A. (Hons.)
(Free Coaching for Competitive Exams) Like :
IAS, RAS, RPSE, SSC, Bank PO, CDS, PSI, Constable, Patwari & Clerical Exam
M.A. | M.S.W. | Library Science | D.LIB | B.LIB | M.LIB
Mob. 76650 17753

SCHOOL OF DESIGN
B. Design : Fashion Design/Textile Design/Interior Design
B.Sc. Design : Fashion Design/Textile Design/Interior Design
M.Design : Fashion Design/Textile Design/Interior Design
M.Sc. Design : Fashion Design/Textile Design/Interior Design
Diploma Advance : Fashion Design/Textile Design/Interior Design
PG Diploma : Fashion Design/Textile Design/Interior Design
Mob. 76650 17785

FIRE AND SAFETY MANAGEMENT
B.Sc. : Fire Technology & Industrial Safety Management
Diploma : Fire & Safety Management
Industrial Safety & Disaster Management
Health, Safety & Environment
PG Diploma : Industrial Safety & Environment
Fire & Safety Management | Health, Safety & Environment
Mob. 96729 70953

COMMERCE
BBA : Global Business Management
B.Com/BBA (Synchronized with competitive exams)
BBA (Digital Marketing)
B.Com with ACCA (UK), B.B.A. with CMA (USA)
B.Com (Hons.) | M.Com.
Mob. 98872 62020

HOTEL MANAGEMENT (AICTE Approved)
Trade Diploma in Hotel Management (TDHM)
Diploma in Hotel Management (DHM)
B.Sc. Hotel Management
Bachelor of Hotel Management & Catering Tech. (BHMCT)
Master of Tourism and Hotel Management (MTHM)
Mob. 96729 78016

AGRICULTURE
B.Sc. (Hons.) Agriculture
M.Sc. Agriculture
Mob. 99292 22551

EDUCATION & PHYSICAL EDUCATION (NCTE Approved)
D.El.Ed. | B.Ed | MA (Education)
B.A. B.Ed. | B.Sc. B.Ed.
B.P.Ed. | M.P.Ed.
Mob. 96729 78055

JOURNALISM AND MASS COMMUNICATION
BA-JMC (BA Journalism and Mass Communication)
MA-JMC (MA Journalism and Mass Communication)
Diploma in Journalism and Mass Communication
Mob. 98872 62020

LAW (BCI Approved)
LL.B. | B.A. LL.B. | LL.M.
Free R.J.S. Coaching & Other Tutorial Classes
Mob. 94601 17336

RESEARCH & DOCTORATE
Ph.D. (In all the streams listed above)
Mob. 96729 78030

DAIRY TECHNOLOGY
B.Tech. Dairy Technology
Mob. 96729 78063

COLLEGE OF FINE ARTS
Diploma in Fine Arts: Painting/Seculpture/Graphic
Bachelor of Fine Arts : Painting/Seculpture/Graphic
PG Diploma in Fine Arts: Painting/Seculpture/Graphic
Master of Fine Arts : Painting/Seculpture/Graphic
Mob. 81074 99313

YOGA
Diploma | PG Diploma | B.A. in Yoga
M.A. in Yoga | M.Sc. in Yoga
Mob. 76650 17752

PHARMACY (Approved by PCI and AICTE)
D.Pharm | B.Pharm | M.Pharm
Doctorate of Pharmacy (Pharm D.)
Doctorate of Pharmacy Post Baccalaureate (Pharm D.)
Mob. 76650 17717

Pacific Competitive Examination Cell
FREE COACHING
UPSC | RAS | SI | ASI | REET Level 1 & II | पटवारी
ग्राम विकास अधिकारी | कॉन्स्टेबल | वनपाल/वनरक्षक
महिला सुपरवाइजर | SSC रेलवे | BSTC/PTET
Mob. 76650 17785

https://www.facebook.com/pacificuniversityofficial https://www.instagram.com/pacific_university/ https://www.youtube.com/user/PacificUdrUniversity

PACIFIC ACADEMY OF HIGHER EDUCATION AND RESEARCH UNIVERSITY

Pacific Hills, Pratapnagar Extension, Airport Road, Debari, Udaipur - 313024 | Ph : 0294-2665000, 9672970940, 7665017787, 7665017785 Email : info@pacific-university.ac.in

Scan for Registration : www.pacific-university.ac.in

खेल-खेल में सृष्टि का विकास और वैभव (4)

- डॉ. पूरन सहगल -

(27) छुपन-छुपाई :

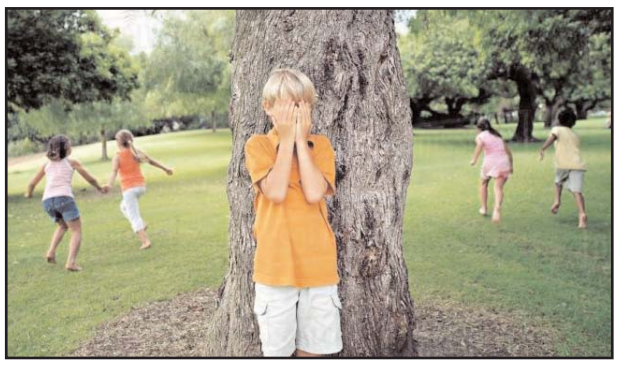

ये खेल पहले खूब खेला जाता था। पुआल और लकड़ियों के ढेर में कहीं भी छुप जाओ दूसरा साथी खोजता रहता था। एक साथी 100 तक गिनती गिनता तब तक आस-पास सभी साथी छिप जाते। एक-एक करके सभी साथियों को खोजना होता, अगर इस दौरान जो खिलाड़ी खोज रहा होता है उसे छुपा हुआ कोई भी साथी पीछे से सिर को छू ले तो उसे दोबारा पूरे साथियों को खोजना होता।

(28) कंचा (गोली) :

यह खेल आज भी गांवों में प्रासंगिक है। इसको खेलने के लिए

छोटी-छोटी गोलियों का प्रयोग होता है। ये गोलियां ज्यादातर मार्बल्स की बनी होती है। इस खेल को खेलने के इतने तरीके हैं कि बताना मुश्किल होता है। कौन सा ज्यादा लोकप्रिय है। फिर भी ज्यादातर एक गोली को अंगुली की मदद से दूसरी पर निशाना लगाने का तरीका ज्यादा पसंद किया जाता है। खेल का नियम के अनुसार गोली पर निशाना लगाने वाले को हर सही निशाने पर दूसरा खिलाड़ी एक गोली देनी होती है। अंत में जो ज्यादा गोलियां जीतता है, वह विजेता कहलाता।

(29) आंख-मिंचौली :

इस खेल में एक खिलाड़ी की आंखों में पट्टी बांधी जाती। फिर उसे बाकी खिलाड़ियों को पकड़ना होता। पकड़े जाने पर दूसरे खिलाड़ी को इसी प्रक्रिया से गुजरना होता। इस गेम को खेलने का

एक और दिलचस्प तरीका है। इसके तहत जिस खिलाड़ी की आंखें बंद होती। उसके सिर पर बाकी खिलाड़ी एक-एक करके थपकी मारते। ऐसे में अगर वह सबसे पहले मारने वाले को पहचान लेता तो पहचाने गए खिलाड़ी की आंखें बंद की जाती। इस खेल में खिलाड़ियों की संख्या पर प्रतिबंध नहीं होता।

(30) ताश के गेम :

ताश के पत्तों में कम खिलाड़ी होने की सूरत में मनोरंजन के लिए तीन दो पांच और सत्ती अट्ठी का सहारा लिया जाता था। तीन

दो पांच में तीन खिलाड़ी और सत्ती अट्ठी में दो खिलाड़ी खेलते थे। पत्ते दो सत्ती और उसके उपर के ही होते थे। इनमें बड़े पत्ते के सहा रेसर बनाए जाते थे और एक खिलाड़ी को तुरुप बोलना पड़ती थी। इन दोनों खेल के कुछ नियम होते थे जिनके मुताबिक खिलाड़ी जीतता था।

(31) चोर-सिपाही :

इसमें खेलने वाली दो टीमों में से एक पुलिस बनती है। दूसरी चोर के रोल में होती है। पुलिस बनने वाली टीम को चोर टीम के खिलाड़ियों को पकड़ना होता है। जैसे ही वह अपने इस काम में सफल हो जाते हैं। वैसे ही चोर टीम पुलिस बन जाती है और पुलिस टीम चोर बन जाती है।

(32) गुट्टे का खेल :

ये लड़कियों का सबसे पसंदीदा खेलों में से एक होता है। इस खेल को खेलने के लिए बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। पत्थर या ईंटों के पांच गोल टुकड़े से खेला जाता है। इस खेल में पत्थर के एक टुकड़े को हवा में उछालना होता है, उसके नीचे आने तक दूसरे टुकड़े को हाथ में उठाना होता है। इस खेल में बहुत फुर्ती चाहिए होती है, क्योंकि हवा में उछलने वाले गुट्टे के नीचे गिरते ही दूसरे गुट्टे को उठाना होता। इस खेल की अलग-अलग प्रक्रियाएं होती हैं। इसे अलग-अलग जगह कई तरीकों से खेला जाता है।

(33) चील झपट्टा :

यह खेल भी गोल घेरे में खेला जाता है। घेरे के अर्द्धवृत्त में एक दल तथा दूसरे अर्द्धवृत्त में दूसरा दल सन्नद्ध रहता है। घेरे के मध्य एक छोटा घेरा बनाकर उसमें एक रुमाल रख दिया जाता है। दोनों अर्द्धवृत्तों के खिलाड़ियों को क्रमांक देकर तैयार रखा जाता है। दोनों दलों के समान क्रमांक वाले खिलाड़ियों को रेफरी दौड़ाता है। दोनों रुमाल की ओर दौड़कर चील की तरह झपटकर उस रुमाल को उठाना चाहते हैं। जिस दल का खिलाड़ी सफल हो जाता है उस दल के खाते में एक नम्बर जुड़ जाता है। अंत में अधिक नम्बर वाला दल विजेता घोषित हो जाता है।

(34) बैला-बैला बक्कू-बक्कू आयो :

यह खेल गाँव के पशुओं की पहचान से सम्बन्ध रखता है। रात को गाँव के सभी किशोर एक स्थान पर एकत्र होकर गाँव के 'पशु पहचानों' का खेल खेलते हैं। बारी-बारी से किसी एक किशोर से किसी किसान का नाम कहकर उसके पशुओं की जानकारी पूछते हैं। नहीं बता पाने पर उसे प्रताड़ित कर अगले दिन जानकारी लाने का हुकुम सुनाते हैं।

इससे भी कठिन खेल तब होता है, जब गाँव के किसी पशु का हुलिया बताकर यह पूछा जाता है कि यह किसका बैल है? इस खेल का अभिप्राय होता है कि प्रत्येक किशोर युवक गाँव के पशुओं को पहचाने। यदि कभी कोई पशु चोरी हो जाय तो गाँव का प्रत्येक व्यक्ति उसे पहचान सके। केवल बैल ही नहीं, गाय-भैंस, बकरा-बकरी, भेड़, घोड़ा आदि का हुलिया भी पूछा जाता है। - **समाप्त**

खेंखरे पर गाय-बैलों.....

(पृष्ठ दो का शेष)

बैल-पूजा की यह परंपरा सामूहिक पूजा के रूप में प्रचलित है। यह पूजा कहीं एक गांव की तो कहीं आसपास के गांवों की संयुक्त रूप लिए है। कहीं घर-घर पूजा का प्रचलन है। समूह में कहीं परंपरागत पटेल-वंश का उत्तराधिकारी यह दायित्व निभाता है तो कहीं पांच पंच मिलकर इसका शुभारंभ करते हैं। कहीं यह काम पंडित करता है तो कहीं सरपंच। उस गांव का बड़ा सम्मान्य मोतबिर भी यह रस्म पूरी करता है।

मेवाड़ के कई ऐसे गांवों के नाम गिनाये जा सकते है, जहां बैल-पूजा की बड़ी जोर-शोर की परंपरा है। राजसमंद का लवाणा और भाणा गांव हो या मावली का डांगीखेड़ा और बिसनपुरा, सामूहिक बैल-पूजा के जाने-माने गांव हैं। बनेड़ा का लांबियारखुर्द गांव आठ सौ, नौ सौ वर्ष पुराना कहा जाता है। यहां की बैल-पूजा भी पांच-सात सौ वर्षों से है। डूंगरपुर के छापी गांव में आसपास के गांवों के पशु भी बड़े सजेधजे एकत्रित होते हैं। यहां ढोल नगाड़ों के साथ पशु खेलाये जाते हैं। इनमें जिन रंग का पशु आगे होता है उसके अनुसार आने वाले वर्ष का शकुन देखा जाता है। निम्बाहेड़ा के लसड़ावन में तो सात स्थानों पर सामूहिक पूजा होती है।

बणजारों का तो बैल ही सब कुछ है, जैसे गाड़ोलिया की गाड़ी होती है। बैलों पर बणज करने के कारण बणजारा जाति ही बन गई। इसके पास पोटियों यानि बैलों का झुंड रहता है। यह झुंड 'बाळद' कहलाता है। पहले दूर-दूर तक पोटियों के माध्यम से सामान पहुंचाया जाता था जैसे आजकल ट्रकें पहुंचाती हैं।

आकोला के पास के बणजारों का झूंपा के बणजारा भेरजी ने बताया कि जब वे वसीवान नहीं थे, यानी उनका स्थायी निवास नहीं था, तब पोटियों के साथ चलते रहते थे। पोटी जब एक स्थान से प्रस्थान करती तो नगाड़ा बजाया जाता। फिर रास्ते में जहां पड़ाव होता, वहां भी नगाड़ा बजता। अपनी बहिन-बेटी के ब्याह पर दहेज में भी नारक्या यानी बछड़ा देते। खेंखरे पर सभी पांगों-पोटियों की पूजा की जाती। उन्हें अच्छा खिलाया जाता। ये पोटी बड़े मजबूत होते। एक-एक पोटी पर छह-छह मण की गुणती लादते।

बैल-पूजा का एक उत्सव सन् 1988 के खेंखरे पर छींपों का आकोला में देखा। दिनभर सभी बस्तियों और घरों में बैलों का ही मनभावन सिणगार होता रहा। बैलों की इस सजावट में घर के सभी लोग मशगूल दिखाई दिये। छोटे-छोटे बच्चे और बच्चियां भी अपनी नन्हीं समझ के अनुसार अपना योगदान करती देखी गई। कोई सींग रंग रहा था। कोई गले में घूघरमाला डाल रहा था। कोई नोटों की माला तैयार कर रहा था तो कोई मुखारबा पहना रहा था। कोई मोरपंख का कोड़ा तैयार कर रहा था तो कोई उसकी पीठ मांड रहा था। महिलाएं घर को मांडने से सजा रही थी तो कोई पलसी चावल का रंधाण रांध रही थी। पूरे गांव में एक विशेष हरख और उत्सवी माहौल था। पुरूष के साथ-साथ पशु भी बड़ा उल्लास उमंग भरा लग रहा था। कहीं घंटियां टनटना रही थी। कहीं घूंघरू घमक रहे थे। अपना-अपना तो सभी करते हैं पर अपने पशुओं के लिए सब मिलकर इतना आंनद ठाठ जोड़ने जुटाने का ऐसा अनोखा रंग मुझे दिनभर चकित-छकित ही किए रहा।

इधर एक टोली गायकों की देखी -हीड़ गायकों की। यह टोली ग्वाल-परंपरा की थी। यह टोली अपने मोतबिर ग्वाले को आगे किए उस हर घर की देहरी पर दस्तक दे रही थी जहां की कोई गाय कभी उसने नहीं, तो उसके किसी पूर्वज पिता-पितामह ने चराई होगी। आज उस घर में कोई दोजा या कि परुण या कि पशु गाय नहीं है, पर फिर भी वह घर उसका है।

यही तो संबंधों की सनातनता है। रिश्तों की रागात्मकता है। ठेठ जीवन की रसलीनता का ठाठ है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी का यह प्रेम संबंध उस गाय के कारण है जो कभी उस घर के ठाणे में बंधी थी। जो कभी उस ग्वाले की बीती पीढ़ी के पास दिनभर चरती थी। अपने दुधड़ले से सबको पुष्ट करती थी। जीवनी-शक्ति देती थी।

यह हेत आज भी बना हुआ है। इसे न आज का ग्वाला जानता है, न इसे घरवाला ही पहचानता है। मगर एक पुष्ट परंपरा का अटूट प्रवाह उन दोनों को बांधे है। टोली घर की देहरी पर बैठती है। हीड़ की कुछ पंक्तियां उच्चरित करती है। गायकी का सारा माधुर्य उस पूरे घर में सुगंध की तरह बिखरता है।

गृह स्वामी-स्वामिनी टोली के प्रत्येक सदस्य से रामासामा कर चाय पानी की मनुहार करते हैं। कोई मुख्येता को नारेळ नजर करता है। कोई उसे फेंटा बंधवाता है। कोई उसे पछेवड़ी ओढ़ाता है तो कोई सरोपाव देता है और फिर वह टोली प्रत्येक घर-गृहस्थ को आने वाले पूरे वर्ष के लिए मंगलाती है और गाय की समग्र सांस्कृतिक गरिता से मंडित होने का सुयश प्रदान करती है। कई स्मृतियां आज भी ताजादम हैं।

प्रोल के बाहर गणेश स्थापना कर दी गई है। पीली मिट्टी का चौक कर साबूत भूट्टे रख दिये गए हैं और उन पर पानी भरा कलश थापित कर दिया गया है। कलश पर लाल कपड़ा और मुंह पर नारियल है। गोहली पर सातिया है। सब मंगल शुभ के प्रदाता हैं। धीरे-धीरे बैलधणी अपने-अपने बैल लिए तरतीबवार कतारबद्ध खड़े हो जाते हैं। प्रोल के सामने की पूरी सड़क, उससे लगी नालियां, आगे का चौक और हेरा सब कुछ बैलों से भरा हुआ है।

संध्या का रात्रि से मिलन हो रहा है और इधर पूजा कार्यक्रम मुहुर्त के अनुसार प्रारंभ कर दिया जाता है। किशनलालजी के साथ उन्हीं के परिवार के जुड़े दो व्यक्ति और हैं। एक के हाथ में पूजापे की परात है और लोहे का पला। दूसरे के हाथ में काकड़े की सुहाती धूप।

यह काकड़ा कपास-बीजों के साथ घी-तेल का हवन है। एक-एक बैल की आरती की जा रही है। धूप दी जा रही है। तिलक निकाला जा रहा है और पूजापा खिलाकर दोनों हाथ जोड़ प्रत्येक बैल से राामासामी कर आगे बढ़ रहे हैं। बैलों को किया जा रहा यह नमन भारतमाता के उन सबल पशु-पुत्रों को नमन है, जिन्होंने धरती का भार अपने कंधों पर झेल रखा है। जो अन्न धन के देवाल हैं। जो कृषि के मूल उपादान हैं। जिनके साथ मनुष्य का सारा जीवनचक्र जुड़ा हुआ है।

इस बीच यदाकदा ढोल वाला अपने ढोल पर डंके की थाप देता सुनाई पड़ता है तो कभी बांकिये वाला अपने पूरे जोर से फूंक भरकर वातावरण में गाढ़ा स्वर भर देता है। कहीं-कहीं पूजा का थाल लिए बहिन-बेटी बैलों की आरती करती दिखाई देती है। आरती पूरी होने पर उसका नेग दो रूपया-पांच रूपया उन्हें दिया जा रहा है। आदमियों के उत्साह की तुलना में इन अबोले जानवरों का उत्साह तनिक भी कम नहीं लग रहा है।

जब सारी पूजा पूरी हो जाती है तब यकायक पटाखे छोड़े जाते हैं। इससे सभी चमक उठते हैं। बैल भड़क उठते हैं और पूरा माहौल भगदड़ में बदल जाता है। न कोई संभले, संभल पाता है न कोई गिरे, उठ पाता है।

सब कुछ स्वप्नवत घटित हो जाता है। जिसे सब कुछ देखते हुए भी कुछ नहीं देखा जाता है और देखते-देखते जादू की तरह खेल खत्म हो जाता है। फिर वहां एक सन्नाटा छा जाता है। रह जाती है कानों में एक गूंज और आंखों में एक अर्द्धजागृत स्वप्न सा सौंदर्य सुख। वह आज भी तैर रहा है।

ऐसा नहीं है कि बैल ही खेंखरे खेलाए जाते हैं। गायें भी खेलाई जाती हैं। चमड़े के सीदड़े में तब कंकड़ डालकर उसे जोर-जोर से बजाया जाता है। इस पर गायें भागती हैं।

कुछ सीदड़े के पीछे पड़ती हैं। कुछ रंभाती हैं। जिस रंग की गाय पहले खेंचारे चढ़ती है, उस रंग के अनुसार आने वाले जमाने के शकुन-फल निकाले जाते हैं। राजसमंद के सादड़ा गांव में भी ऐसे ही गायें खेलाई, दौड़ाई, रमाई जाती हैं। जिस रंग की गाय रावले की ओर पहले भाग खड़ी होती है, उसके अनुसार आने वाले जमाने का फल निकाला जाता है। यथा- सफेद रंग की गाय से अच्छा वर्ष, काले रंग से समय मध्यम और चितकबरे से ठीकठाक होने का अनुमान कर लिया जाता है।

नाथद्वारा, श्रीनाथजी की नगरी में तो गायों का महा-महोत्सव ही मनाया जाता है। यहां गायें ऐसी सणगारी जाती है जैसे सभी नववधुएं हों। गायों के साथ ग्वाले भी बड़े रंगरसिया लगते हैं। रंगगिरंगी पगड़ियां, अंगरखियां पहने बांके ग्वालों की आंखों में काजल और गले में डोरा।

लगभग पांच सौ गायें अपने-अपने ग्वालों के पास मंदिर के बाहर खड़ी हो जाती हैं। चौक और चौपाटी पर ग्वाला सीदड़ा (कूंजी) बजाता है, किलकारी मारता गायों को खेलाता है। गायें उस पर लपकती भागती हैं। ग्वाला बार-बार उन्हें रिझाता। गायें उसे भेंटी मारती हैं। सींग देती हैं। इसे देखने भीड़ इतनी उलट पड़ती है कि पांव देने की जगह नहीं रहती।

दीवाली सबका त्यौहार है। साधकों, तांत्रिकों, सिद्धों का, प्रकाश का, धर्म और अध्यात्म का, निर्धनों का धनपतियों का, वन-वनस्पतियों का तो पंछियों, पशुओं का भी।

SAI TIRUPATI UNIVERSITY, UDAIPUR

(Approved by Section 2(f) of UGC Act 1956)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

ADMISSION OPEN 2023-24

Call us: 9587890142, 9587890082

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES

Approved By RPMC

DIPLOMA

- Radiation Technology (X-Ray)
- Dialysis Technology
- Operation Theatre Technology
- Blood Bank Technology
- Medical Laboratory Technology
- Endoscopy Technology
- ECG Technology
- EEG Technology
- Cath Lab Technology
- Ophthalmic Technology

DEGREE

- Bachelor in Medical Lab Technology
- Bachelor in Radiation Imaging (X-Ray)
- Bachelor in Ophthalmic Technology

9257016003
9587890142

VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY

Approved By PCI

D.PHARMA (2 Years) B.PHARMA (4 Years) 9257016004

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY

B.P.T. (4.5 Years) M.P.T. (2 Years) 9257016002

VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY & MASS COMMUNICATION

B.Voc, M.Voc, B. Des, M. Des (Fashion Designing, Interior Designing)

BA-JMC, MA-JMC 9672978017, 9588936922

VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES

MBA (Hospital Administration and Health Care Management) 9672978017, 9588936922

PIMS PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

Near Umarda Railway Station, Ambua Road, Udaipur, Rajasthan

WWW.PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN 0294 - 3510000, +91-86964 40666

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।